15361
15361

शोध संस्थान
अयोध्या

॥ सीताराम नमः ॥

विरह चालीसा

लेखिकाः—श्रीमती "अम्बा"

समर्पणः— परम पूज्य गुरुदेव के पावन चरणों में अपनी तुच्छ श्रद्धा का प्रथम पुष्प सादर समर्पित।

"अम्बा"

प्रकाशकः—श्री महावीर दास जी

पुस्तक मिलने का पताः—

श्री जानकीवल्लभ निवास

लक्ष्मणघाट, श्रीअयोध्याजी।

सर्वाधिकार पूज्य गुरुदेव के आधीन

मुद्रकः—

श्रीसीताराम प्रेस, प्रमोदबन

श्रीअयोध्याजी।

प्रथमबार ५००] १९६२ [मूल्य केवल प्रेम

❀ श्री जानकीबल्लभो विजयते ❀

"रंग भरी जोड़ी सदा चिर जीवो"

शोध संस्थान
15361

—: प्राक्कथन :—

"भनित मोरि सब गुण रहित, विश्व विदित गुण एक।
सो विचारि सुनिहहिं सुमति, जिनके विमल विवेक॥
कीरति भनित भूति भलि सोई। सुरसरि सम सब कहँ हित होई॥"

सेवक को प्रसाद पा लेना उसका परम साध्य है। यद्यपि सेव्य-भाव भक्ति का सुन्दरतम एवं सहज सरल मार्ग है, फिर भी उसकी प्राप्ति विरले को ही होती है। स्वरूप धारण बाह्य संस्कार भी अंतरंग भाव को उद्दीपन करने के लिये परम साध्य है देवापगा की पवित्रता, शशि की शीतलता और काम की कमनीयता सर्व देव दुर्लभ वस्तुएं हैं परन्तु हरि कृपा तो अति अलभ्य। जिसकी सेवा में ही दिनमणि तपते हैं, समीर संचारित होते हैं, त्रिलोक स्थित, यति देव गन्धर्व निर्निमेष, सविनय समुस्थित हों उनकी कृपा कोर और चरण-सेवा क्यों न अनुपमेय हो। इस भूमि पर धन्य वही है जिसने सेवा का फल पाया जिनके रोम रोम में अगणित ब्रह्माण्ड स्थित हों, जिनकी चरण-शोभा का वर्णन करते सभी थक गये, सबों ने नेति नेति कह कर मूकता ग्रहण करली। उस अगोचर अपरम्पार महोदधि में एक बालु का-कण की भांति भी अपने को न समझती हुई, सेव्या ने जो अपना भाव यहां प्रकट किया है उसका मनन कर हृदय विभोर हो जाता है। जिस भाँति आत्मा का अभिव्यंजन यहां व्यक्त, है अन्यत्र ढूंढने पर भी मिलना कठिन है। विनय, प्रेम एवं प्रणय से सराबोर हो कर निःसृत है। हृदय में पीर जैसी जगी है, उसका मनन करते ही बरबस मीरा का स्मरण हो आता है। हरि कृपा से रहित होकर कभी भी यह सम्भव नहीं हैं। इस अनुराग की जैसी अवस्था यहाँ देखने को मिलती है उसे सज्जन पुरुष ही समझते हैं। इसका माधुर्य वचन से नहीं कहा जा सकता है केवल हृदय से उसका अनुभव किया जा सकता है। सभी पद प्रेम रस से सने सरस ही नहीं गेय भी हैं। युगल छबि का शृंगार भावना से ओत प्रोत वर्णन पढ़कर वाणी मूक भी हो ही जाती है फिर स्निग्धता ऐसी

अंकुरित होती है कि मन आत्म विभोर होकर ही रहता है।

जिनकी शुचि भावना इस रूप में आपके सम्मुख प्रस्तुत है, वे स्वयं श्री किशोरी जी की जन्म भूमि में ही प्रादुर्भूत हुई है। आप पुनौड़ा ग्रामवासी श्री कपिलदेव प्रसाद सिंह जी की सुपुत्री हैं। मिथिला में जन्म पाकर चम्पारण जिलान्तर्गत श्री मथुरा प्रसाद सिंह जी की पुत्र-बधू हैं। इनके देवता स्वरूप जीवन-धन श्री श्यामनारायण सिंह जी उच्च शिक्षा की प्राप्ति के उद्देश्य से आज जर्मन निवासी हैं। मीरा यदि राज घराने की थी तो इधर भी श्री सम्पदा सम्पन्न सेव्या 'अम्बा' है। इनका परिचय वस्तुतः इनकी रचना है, तथा यह प्रसाद है परम पूज्य गुरुदेव श्रीश्री महाबीर दास जी का, जिनकी कृपा से भगवद्-मार्ग का लेखिका ने अनुसरण किया। पूज्यतम गुरुदेव के चरण स्पर्श की प्रतिभा ही इस उज्जवल ज्योति उद्रेक का कारण स्वरूप है।

भक्तों के लिये यह हृदय हार सदृश है। इन पदों के संबंध में जो कुछ भी कहा जाय सन्तोष नहीं हो पाता। इसका एक एक पद सज्जनों के हृदय में बिराट कल्पना का प्रेरक है। त्रुटियों के लिये भय इस लिये नहीं कि उससे रहित होना भी कहां देखा गया। यह जो कुछ है तुलसी-दल जैसा है। अब यह आप पर रहा कि उसको महत्व जितना देवें। यह अर्घ शबरी के बैर, सुदामा के तंदुल और बिदुर की शाक की भांति प्रस्तुत है।

यथार्थ अनुभूति की मांग में:—

आदरणीय कृपालु भक्तवर
श्री बिन्देश्वरी प्रसाद जी,
श्री लक्ष्मी सिंह जी,
श्री राम सेवक राय जी;
श्री राम स्वरूप सिंह जी,

श्री अवध भूषण श्री १०८
बाबा महावीर दास जी
(गायनाचार्य) श्री मान पूज्य
पाद बकुलहरा मठाधीश
ईश्वरदासजी (ब्रह्मचारीजी)

विनीत:—**भुवनेश्वर सिंह**
बी० ए० आनर्स
ग्राम पो० परसा (सुगौली) चम्पारण

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

* विरह चालीसा *

॥ गुरु वन्दना ॥

वन्दौं प्रथम गुरु पद कमल मैं पाई जिनसे भक्ति हूँ
धन भाग्य है गुरु दरस वर पाई मैं जिनसे शक्ति हूँ
उस भक्ति का बर्णन कहां जासे बड़ी अनुरक्ति है
विनु हेतु श्रीगुरु की कृपा से ज्योति दिल में जक्ति है
हमरे दृगन से दूर जाकर हमको न प्रभुजी भूलना
विन तुम्हारे 'अम्ब' कहँ मारग कठिन है सूझना ।

॥ सन्त बन्दना ॥

वन्दौं अवध संत सुखदाई,
जा सुमरण से मिटहिं मोह मद पापहु की तरुनाई ।
तिन्ह संतन की करूं वंदना जिनके प्रिय श्रीरघुराई ॥
जिन पर प्रेम दृष्टि हर क्षण में करत रहत सुरसाई ।
करूं वंदना सो संतन कर 'अम्ब' चरण चितलाई ॥

॥ श्री जानकी महारानी जू की वन्दना ॥

भजु जनक नन्दिनी प्राण प्रिय रघुबीर शोभा जानकी

सुनयन चन्दनी बैन चन्दिनी हो प्रिया श्रीराम की
मोहि दुख बुलाई सुख भुलाई सुन प्रिया मम प्राण की
रघुवीर आवैं पीर भागें करूं जतन प्रिय राम की।
तुम अंश ते उपजहिं अनेकन नेक भामिनी नाथ की
बड़ी चूक कीन्हीं भूल दीन्हीं तुम हिया रघुनाथ की
अब छमहू देवी प्रेम सेवी शोभा अगम छविधाम की
तुम निदरि प्रियतम संगमें कोभा अखिल सुखधाम की
हैं दीन इच्छा मांगि भिक्षा त्यागि मन अभिमान की
श्रीयुगल शोभा देहु मो कहँ 'अम्ब' यह वरदान की

॥ पद मैथिली भाषा ॥

जनमक जानकी छल मोरी माय।
पुनि अब जीभ कहब सखि हाय॥
पुनि पुनि भेंटब हृदय लगाय।
मन अस जानकी दासि कहाय॥
दुलहा साँवर भेंटल आय।
दुलहिन स्वर्णी हम मनु भाय॥
जोड़िहुँ विरहा सहल न जाय।
विनवत 'अम्बा' होउ सहाय॥

॥ पद भजन ॥

चलु मन चलु मन सरयू तीरे।
जोहत बाट जहां रघुबीरे ॥
मोहत श्याम मुखड़ शुभ रोरी।
बाम अंग मिथिलेश किशोरी ॥
गौर शरीर नयन शुभकारी।
सोहत पिय संग राजकुमारी ॥
चलु मन युगल सुछवि निरखावैं।
देखत 'अम्ब' परम सुख पावैं ॥

॥ स्वप्न गाथा ॥

अति पुण्य महीना सब सुख दीन्हा,
दिनकर मणि ब्रत सुघराई।
रजनी बहु बीते नयन सुभीते,
सोयो निज तन बिसराई ॥
दोहा—देख्यो सुमन सुवर्ण के, अनुपम छटा बहार।
थेवे सिय पिय बाग के, नहिं कर भंवर अहार ॥
देखन तब लागे नयन सुपागे,
अवध नगर की सुघराई।
देखत जेहि लाजै, विज्ञ समाजें,

लाग दिखावन रघुराई ॥

दोहा—रहा कंगूर आकाश लों, बरसावत मणि चूर।
ऊपर से नीचे परत, धरणी हम पग पूर ॥

कोटिक इक संगा, रंग बिरंगा,
शीश महल सुभ झलकाई।
धन धन हम भागी, प्रभु संग लागी,
छनक तहां रख बिलमाई ॥

दोहा—त्रेता की शोभा अवध, मैं जो सहित सहाय।
सो सब हमें दिखाइ के, आगे दीन्ह बढ़ाय ॥

नहीं जानत साथा, कौन सुनाथा,
रहा बतावत बरआई।
पुनि-पुनि हम आगे, देखन लागे,
सिय संग बस जहँ सुरसाई ॥

दोहा—धन्य धन्य ये हो गई, धन्य सुभागिनी साइ।
थोड़े से ऊंचे शिखर, पर मैं पहुंची जाइ ॥

धिग नारि गंवारी, ज्ञान बिगारी,
प्रान प्रिया नहिं शरनाई।
दिखलावत रूपम्, परम अनूपम,
जीवन धन नहिं बिरमाई ॥

दोह—एक साथ ही निकल पड़े कौशल राजकिसोर।
जाकर विरह न सहि सकत है अम्बा मतिथोर॥

रोवत बहु अम्बा हे जगदम्बा
पुनि पुनि दरस देहु आई।
हम आंख पसारी क्षणक गँवारी
मम लगि बैठ्यो सरनाई॥

दोहा—मोसो कौन गरीबनी तुम सों कौसलराय।
मम लगि भेज्यो जानकी दरस दीन प्रभु आय॥

विहँसत मुख श्यामल नयन भुआंवल
'अम्बा' सुछबि दरश पाई।
लखि हृदय जुड़ानी अमृत बानी
'अम्बा' आँख श्रवै आई॥

दोहा—कर सम्पुट सुन्दर सुमन, रघुनन्दन जेहि नाम।
दइ भुलाइ छवि दरश दै, छिपि गये मंदिर श्याम॥

बड़ि बेर हमारी श्री सुकुमारी
सखियन सँग मन चितलाई।
यहि जन्म की पापिन, विषमै सांपिनि,
को निज आनन दिखलाई॥

दोहा—श्री रघुनन्दन प्राण प्रिया, नहिं कुछ भूषण अंग।
पापी नींद उचटि गये, भयो महा रस भंग॥

रघुनन्दन प्यारी, सुवरन सारी,
रूप अनूपम छवि छाजे।
मम नैन अभागे, देखि सुभागे,
जेहि लखि कोटिन रति लाजे॥

दोहा—नैन खुलत दुख व्यापेउ, हृदय जलत दिन रैन।
एक राम प्रिय साधु मन, 'अम्ब' स्वप्न रस बैन॥

भजन तर्ज (मेरे राम अयोध्या बुलालो मुझे)

सिया राम चुराये मोरी चित्त बड़ी।
तुम सब सुखधाम मुरारि हरी॥
हे जानकि प्राण के प्यारे हरी।
जिन्ह जोरिह देख लजाय मरी॥
उन्ह कोमल जोरी की छाती कड़ी।
जिन्ह 'अम्ब' कि नेह न उर में धरी॥

॥ भजन तर्ज कव्वाली ॥

भूले कमल नयनमा दिखादे मुझे।
प्यारे नील वदन से मिलादे मुझे॥

है कोई दुनियां में प्यारे की प्यारी
जरा सांवल सूरत से मिलादे मुझे ।
है कोई बगिया में ऐ रखवारी
जरा सूखे सुमन को खिलादे मुझे ॥
कौन ऐसा है प्रभु जी का प्यारा अरे
जरा विहँसत अधर दिखादे मुझे ।
पड़ी मँझधार में नैया मेरी
कोई नैया को पार लगा दे मुझे ॥
है मोरी प्रान पपीहा सी प्यासी
छवि अमृत पान करादे मुझे ।
कोई लाके सजीवन मूरी सखी
इस मुरदे में जान लगादे मुझे ॥
है कर सुमन सुरति चित हारी
जरा तिरछी नजरिया दिखादे मुझे ।
छूट गई सब संग की सखियां
अब प्रीति की रीति दिखादे मुझे ॥
अब 'अम्बा' के धनुधर प्रभु जी
प्यारे अपने गले से लगा जा मुझे ॥

॥ गजल ॥

नींद भी प्यारी मुझे तब से लगी,
खुद प्रभु जब नींद में दरसन दिया।
मौन रहना भी मुझे प्यारा हुआ,
मौन ही रहकर हिया हरषित किया॥
एक ही क्षण में अहो प्यारी छुटा,
शून्य करके जिन्दगी दिखला दिया।
राजसी पोशाक में थे वे सजे,
जिन्दगी के हैं अनुप प्यारे मजे॥
एक ही छुन में विलग वे हो गए,
नीलता में दृश्य था कैसा मिला।
गए छुल पर साथ ही बतला चले,
नींद में ही आस दरसन का दिया॥
आंख ही पाकर कहो हम क्या किया,
शीश भी नाकर कहो क्या ले लिया।
इस नश्रु जीवन देह पर धिक्कार है,
बिन प्रभु की जिन्दगी बेकार है॥
कोमल अधर मृदुहास्य ही देखा भला,
हाय प्रभु ने एक ही छुन में छला।

दीन 'अम्बा' को प्रभु भरमा चले
चलते समय भी साथ में नहिं ले चले ॥

॥ तर्ज प्यारी प्रेम लुभानी ॥

सुन प्रियतम मोरे क्यों छिपत प्रेम लगाए न ।
कस भेजत पाती अम्ब की छाती जलाए न ॥
सुन्दरी पटरानी हम तोरी दासी कहाए न ।
सुरति मम बानी सब दुख देवि दहाए न ॥
सुनु प्रियतम प्यारे जग बन्दिनी साथ बिहाय न ।
छमि चूक हमारी प्राण के प्यारे रिसाय न ॥
जनि छिप के आवहु मति राखहु अम्ब दुराय न ।
युगल छबि भावहु जेहि 'अम्ब' नयन सरमाय न ॥

॥ झूलन ॥

झूलन पर झूलैं श्यामल गौर सुहाए न ।
कर सों कर जोरे बैठे चरण लटकाए न ॥
भुज अंसन दीन्हे प्रेम उमंग बढ़ाए न ।
सब सखिन प्रेम भरि दीन्हें झोंक चलाए न ॥
'अम्बा' प्रिया प्रीतम झूलत मोद बढ़ाए न ।
नान्ही बूंदन छाये उन पर परत फुहार न ॥

झूलन पर झूलैं श्यामल गौर सुहाय न ॥

॥ झूलन ॥

छोडु. छोडु. रघुवर नरम कलइया
कि मुरकत बहियां हो हमार ।
टूटि जात अंगुली के मनियन मुंदरी
कि फूटि जात चुड़ियां हो हमार ॥
मोडु. मोडु. मन मोहन अपने नयनमा
कि छाती मोरी लागत हो कहार ।
दरपन लेइ मुख निरखि ललनमा
कि सुरति की अजब हो बहार ॥
बड़ा तो हठीला सखि सिया के सजनमा
कि बीचे मग ठाने बड़ा हो रार ।
मुसकन 'अंब' मोहन अंगुरी मरोरि देलन
हाय सखि गेली हो बलिहार ॥

॥ तर्ज बटोहिया ॥

मोरि नैहरवा तो मिथिला नगरिया में
हमरा के कहवां ले जाइ छी कहरिया ।
अवध नगरिया के सांवर ललनमा से

धनु तोरि तोहरा के पाये दुलहिनिया ॥
जनक नगरिया में तोरि नैहरवा से
अवध के धइली डगर दुलहिनिया ।
जनक कुमारी सिया 'अम्बा' प्राण प्यारी सिया
अवध के भेलि दुलहिन दुलहिनिया ॥

॥ पराती ॥

अब सखि जतन मोरि न जाय ।
अनूप सुन्दरी जनक नन्दिनी रामसो पति पाय । अब०
एक बर मोहि देहु प्रभु जी मोह नहिं नियराय । अब०
निजकर लपकि सुधारि तोरहु विटप फल पियराय । अब०
स्वाद लेइ प्रभु अपने मुख सों निकट मोहि बुलाय । अब०
चाखि राखहु अम्ब अपने शरण मन चितलाय । अब०
श्रीप्रियतम रघुनन्दन स्वामी देहु विपति बहाय । अब०
'अम्ब' तिहुँ पुर झूठ लागत सांच जोरी हाय ॥ अब०

॥ पराती ॥

युगल छवि मिलल सपनमा में आये ।
कैसे रूप छटा रघुनन्दन श्यामल सूर लजाये ॥
लखत छवि मिलल सपनमा में आये ।

पीन बसन पहिरे महारानी लाखरती सरमाय ॥
कहत कोई मिलल सपनमा में आये ।
स्वेत बसन शोभित लालन को कोटिन काम लजाये ॥
प्रान पति मिलल सपनमा में आये ।
हँसनि एक हमहूँ सुन पाई तब लगि श्याम पराई ॥
करम गति मिलल सपनमा में आई ।
'अम्ब' हृदय बिरहा नहिं थोरे मिलिहैं अवसि रघुराई ॥
अवध पति मिलल सपनमा में आई ॥

॥ भजन ॥

दशरथ राजकिशोर भए नहिं भोर
नयनमा पै छाई गयो हो ॥
दिये झलक दिखाये जिया ललचाये
दुखित को सताई गयो हो ॥
इक दुखम कहानी की नूतन बहानी
सजनमा दिखाई गयो हो ॥
अहो काया सकल जगमाया
सुरतिया दिखाई गयो हो ॥
न मोसन बोलेंन की कछु कौलें से
जदुआ चलाई गयो हो ॥

दीन दुखिया की बाड़ी वे कर गए उजाड़ी
'अम्बा' ललचाई गयो हो ॥

॥ भजन ॥

हाय सिया कासों कहौं दिलवतिया ।
नहु नहु प्रीतम प्रीत सिखावे,
पीर लगे मोरी छतिया । हाय सिया०
कहुँ कहुँ प्रीतम हिया हरसावे,
नयना बहत दिन रतिया । हाय सिया०
नहिं हम मांगत नाक अमरपद
नहिं त्रैलोक की गदिया । हाय सिया०
काहे के श्यामल मुखड़ा छिपायल
हमसे लजावत रसिया । हाय सिया०
वैदेही प्यारे 'अम्बा' अधारे
जल्दी दिखाओ मोहि अँखिया । हाय०

॥ पद ॥

रहि रहि जिया घबराय रे ललन की सुरति करके ।
कबहुँ कि सिय पिय कबहुँ कि रघुबर
कबहुँ करूँ सरनइया । ललन०

कबहुंक रोना कबहुँक हँसना
कबहुँ गावत सहनइया । ललन०
सब सखि देखे तीर धनु मुरली
मैंतो सुमन की छिपइया । ललन०
सब कोई देखे मातु पितु बंधु
मैं देखौं निज सइयां । ललन०
सब जन देखत धीर वीर प्रभु
'अम्बा' तो धूम मचैया । ललन०

॥ पद ॥

पिय तुव प्रणय राति कब अइहैं ।
मन परिपूरण करि प्रीतम जू नूतन साज सजइहैं ।
किंकर लखि कब प्राणप्रिया को नव शृंगार बनइहैं ॥
कब रघुनन्दन प्राण प्रिय मोहि छाती आय लगइहैं ॥
मग सबरी पग अहिल्या तारे 'अम्बा' पति कहइहैं ॥

॥ पद ॥

जनक कुमारी प्यारी सिया सुकुमारी हे
कैसे छबि भुलतन ।
दशरथ राजकुमार हे कैसे छबि भुलतन ॥

प्राणों से प्यारी सिया लगथिन बहिनिया
हे कैसे छबि भुलतन ।
लालन पहुनमा हमार हे कैसे छबि भुलतन ॥
युगल अनूप रूप भजथिन पुरारि
हे कैसे छबि भुलतन ।
बांकी सुरतिया देहु दिखाय हे कैसे छबि भुलतन ॥
पिया के संग सिया अवध विराजत
हे कैसे छबि भुलतन ।
'अम्बा' के हिहलन विलगाय हे कैसे छबि भुलतन ॥
बेरि बेरि कहे सिया तोहरी बहिनिया
हे कैसे छबि भुलतन ।
सुनहु साजन मोरे प्राण हे कैसे छबि भुलतन ।
युगल सुरतिया की बांकी सुरतिया
हे कैसे छबि भुलतन ।
मंद मंद रह्यो मुसकाय हे कैसे छबि भुलतन ॥
कौसिला ललनमा मम प्राण के आधार
हे कैसे छबि भुलतन ।
निरखत चितवा चोराय हे कैसे छबि भुलतन ॥

॥ पद ॥

मोहन काहे के दिखावल मुखड़ा आन के
पापी जियरा जान के न ॥
तू तो रहलौं एक ओर काहे परल लोहरा सोर
काहे चितवा चुरावल झकझोर में,
सुन्दर मुखड़ा ओर में न ॥
तू तो डूबत को है बेड़ा निर्मल मनमें तोहरा डेरा,
प्रभु जी काहे न लगावत छतिया आइ के
बिपतिया बिहाई के न ॥
जब तू नेहवा लगावल तब तू नतवा लगायब,
प्रभु जी पतवा राखब निज जन जानकें
करुण रस आनि के न ॥
'अम्बा' कहे बरजोर बहे नयनमा से लोर,
प्रीतम अँसुआं पोंछहु पट छोर से
निठुर मनमा मोर के न ॥

॥ पद ॥ तर्ज प्रेम प्यारी लुभानी

मोरे हृदय गलानी, कैसे चरण लपटाऊं हां ॥
प्रिय प्रीत पुरानी, कैसे हृदय हरखाऊं हां ॥

हे युगल छबिखानी, 'अम्बा' की भीति भगाई हां।
जुड़वावहु छाती अम्बहि प्रेम दुहाई हां॥

॥ कवित्त ॥

बड़े अरमान वारे हैं मेरे अरमान लेते हैं।
दुहाई राम की सजनि दुराई हमको देते हैं॥
सुनो जगदम्ब महरानी ये ऐसे नित ही करते हैं।
जो जलता विरह से उनकी तो दरसन अल्प बरते हैं॥

॥ तर्ज विद्यापति ॥

कहां मिलिहैं मन मोहन हो जहाँ खोजब जाई।
बहि सम कमलनयन शुभ हो लालन तरुनाई॥
पंथक सुनहु विनय मम हो पिय सनमुख जाई।
विरहिन विरह सुनायहु हो जेहि भेटिहैं आई॥
पूछहु पुनि पुनि प्रभु सें हो प्रियतम रघुराई।
कहां उदारपन छूटल हो छूटल करुनाई॥
काहे न 'अम्ब' बुलावल हो जहां युगल सुहाई।
सोइ थल अम्ब बतावहु हो जहां सिय पिय पाई॥

॥ भजन तर्ज विद्यापति ॥

प्रियतम विरह सहल वहु रे अब सहलो न जाई।

हृदय बात हृदय बीच रे केहुँ कहलो न जाई ॥
सांवर रूप चितै बस रे, नयना पर छाय ।
श्री मिथिलेश किशोरी हे, बिनती बहु हाय ॥
मिथिलापुर नगरी में जनमहु रे तब दासी कहाई ।
तोरेहि नाथ निहोरऊं रे पुनि पुनि सिरनाई ॥
प्रीतम साथ रखहु मोहि रे जनि नयना लजाई ।
अम्ब सुरति जगदम्बहि रे मोहि बिसरि न जाई ॥
चितवहुं बाट रैन दिन रे मिलिहैं प्रभु आई ।
'अम्बा' बिपति अति दारुण रे नहिं जग पतिआई ॥

॥ भजन ॥

बात बीच नयना बरसत हो जस मोतिन माले ।
हाय हृदय फटि जात न हो बिनु दशरथ लाले ॥
सोभित सुमन चमेलिन हो कर संपुट बीचे ।
कनक पखान पड़े जनु हो अति दुर्गम कीचे ॥
तैसहि नाथ दिखावल हो नीचहुँ निज रूपे ।
हृदय किवाड़ खुलल नहिं हो पाय कौशल भूपे ॥
रघुपति राघव रघुबर हो तब रूप अनूपे ।
जगदम्बा मिलि धावहु हो 'अंबा' दुख कूपे ॥

॥ भजन ॥

भजु मन जानकी नित चरन ।
जाहि सुमिरन होत खंडित ताप त्रय भव परन ।
जाहि कृपा कटाक्ष पावत राम की सब सरन ॥ भजु०
जाहि निरखत सुखद उपवन लाभ पुनि पुनि फरन ।
जाहि कोप प्रकोप भूले लगहिं अमृत झरन ॥ भजु०
जाहि कोपनल पवन सह लगहिं हिमकण जरन ।
भजहिं सब जग जानकी जेहि 'अंब' सब सुख भरन ॥

॥ भजन तर्ज विद्या गति ॥

बहुत जतन हरि पावल रे, भइ जियरा निहाल ।
छुनहि मुखड़ छुवि छीनल रे, करि जियरा विहाल ॥
नाथनि मोर अनाथनि के संग दशरथ लाल ।
एक साल उर आवत रे नहिं उर जयमाल ॥
नहिं मोर बानी मिलल कवि रे नहिं राग न ताल ।
काल के गति नियरायल रे भई छतिया साल ॥
संग सिया रघुनाथहि रे नित करत कलोल ।
काहे के 'अम्ब' निकासल रे बिकई बिन मोल ॥

॥ पद ॥

चित धरु साजनि राम सिया हो।
गौर बदनि मम सुन्दरि सीता
सांवर दुलह सुहात जिया हो। चित०
कहत एक सखी सुन प्रिय साजनि
श्याम गौर चितचोर लिया हो। चित०
प्रथमहि बिनु देखे रघुनन्दन
श्री गौरी जू से मांगि लिया हो। चित०
चलु सखि चलु सखि पुनि गिरिजा पग
लागि मांगु श्री राम पिया हो। चित०
'अंब' की प्यारी दुलहिन गोरी
दुलहा श्यामल भाव हिया हो। चित०

॥ पद ॥

रघुबर प्राणप्रिय सबही के।
प्राण प्राण के प्यार प्यार के
प्रिय हैं सब जन जी के।
प्रिय सिय जू के अरु सखियन के
पत्नी प्रेम प्रिय पी के॥

जब से गर्भ के पड़े नरक में
हरि दिए सिख तबही से ।
सुन मलीन मन कठिन करम तजि
सुमिरौ हरि अब ही से ॥
तन से मन से प्रिय बैनन से
पूरन प्रेम अमी से ।
तन मन जलत आंच बिरहाकुल
हैं वे जलज अमी के ॥
'अंबा' के प्रभु भेंटहु आए
अबगुन चित न धरी जे ॥

॥ पद ॥

अब न सहब दारुन दुख भारी ।
गीध तरे सबरी भी तरि गए
तरि गए नारि गँवारी ।
कहँ ये रज समान दुखिया है
तुलसी सूर उजियारी ॥ अब०
धरनी आकाश बराबरि करिके
जानी सबरी तारी ।

यह बड़ि चूक क्षमा करियो प्रभु
जानत निपट दुखारी ॥ अब०
मेरे में तू सब कुछ जानै
सबै करावन हारी ।
फिरि फिरि चाहर तानी आगे
कर गई झांकन हारी ॥ अब०
अब तो गाड़ी चली मंजिल पर
'अम्बा' बीच सँभारी ।
बिन तेरे रघुनन्दन प्यारे
है को हांकन हारी ॥ अब०

॥ पद ॥

प्रभु जी कहँ वीरता छिपाई ।
कहुँ आपन दुख बहुत एक मुख
करिके परम ढिठाई ।
प्रेम पाश में बँध कर राघव
खाते जहर मिठाई ॥ प्रभु०
जहर प्रेम में पागे रघुवर
अमिय धार बरसाई ।

कहँ बहे प्रेम हमारी बैरी
जानत तोर बसाई ॥ प्रभु०
क्या शबरी तारन के कारन
प्रभु के पांच पिराई ।
या तारत तारत जिय हारे
अब कत प्रेम दुराई ॥ प्रभु०
मान मान मन प्रेम पिया से
अब के प्यास बुझाई ॥
'अम्बा' के हरि नयन सीध में
सिय रघुबीर दिखाई ॥ प्रभु०
दूर करो माया रघुवर जेहि
मुनियन नाच नचाई ।
राखहु प्यारे अति सुकुमारे
राखहु प्रेम सचाई ॥ प्रभु०

॥ पद ॥

कौशलपति बहुरि कौसला आवौ ।
तरसत नयन वचन अरु तन मन
सिय रघुबीर दिखावौ ।

क्षणिक सपन में मोहि लियो मन
अब जनि बहुत खेलावौ ॥
बहुत आस विश्वास साथ लै
तोर दरस मैं पावौ ।
चपल दृगन से देखि छिपे कत
कछु न कहन हम पावौ ॥
देखी आंख पसारे तेरे
जौन रूप की माया ।
उसी रूप में फँस कर नटवर
दुखिया ने दुख पाया ॥
श्याम रूप है रुचिर कसौटी
तापर रगड़ लगावौ ।
'अम्बा' कंचन खूब बनी जो
तो मोहि हृदय लगावौ ॥

॥ पद ॥

तेरे नाम रटन से रघुबर घरे पाव हम कासी ॥
तेरे नाम रटन महिमा शिव
देत सुगति अविनासी ॥

धन हम जग वल्लभ तुम पाए
स्वामिनि मोरि सिया जी ।
अब का कहूँ अधिक सुख थाके
तुम सब उर के वासी ॥
'अम्बा' कहे दुखित कर जोरे
सुनि पुकार उठि धावौ ।
जो सुख सहज अनेक काम छबि
नयनन लाभ करावौ ॥

॥ पद ॥

स्वपनुमा में दुख दीनों सुरसाई ।
प्रिय दरसन की अमिट लालसा
जगी न उर अपने में ।
नहिं थी आस दरस की रघुवर
द्रवे तू खुद सपने में ॥
धन धन धनिक किए मोंहि प्रभु जी
आए बिन जपना के ।
एक आस बिश्वास चरन में
कोटि कोटि तपना के ॥

प्रेम सरित के नीर नहाले
धो काली नैमा से।
परे विपत हा नाथ पुकारे
कहे रमा रमना से॥
तेरे दरस मुलन की आसा
कभी न दिल में आई।
तेरे प्रेम मिलन की वासा
हृदय जलज बन छाई॥
एक महा दुख विरह सतावे
जो नयना ढरि आई।
कौशलनाथ मोहि अपनावो
नाहिं तो भयो पराई॥
कह 'अम्बा' हम धन हे प्रीतम
सरन आपकी आई।
हम कहँ अब जनि त्यागियो प्यारे
नाहिंत मरिहौं जाई॥

॥ पद ॥

प्रभु क्यों छिपे नजर के आगे।

जपन तपन बिन चाहत बांधन

एक प्रेम के धागे ।

पाप करम रत रहे दिवस निसि

अब लगि डरत अभागे ॥

भज 'अम्बा' रघुवर धनुपानि

पावहुगे फल आगे ।

जब से लखि रघुवंश महामनि

सोचन निसि दिन लागे ॥

सोचत सोच विमोचन मेरे

भाग्य रैन दिन जागे ।

इस लघु दीन परम दुखिया के

रहत हृदय में पागे ॥

॥ पद ॥

रे मन मूढ़ समझ नहिं तो कहँ नीच शत्रु बहु पासे ।

दुनिया के नश्वर सुख छोड़ु. देत तोहि गर फांसे ॥

गांठ खोलि निज देख अभागे कंचन धरु तजि कांसे ।

अमृत राम सुहावन त्यागे पियत नीर विषया से ॥

तनक प्रकाश रहा दिखला के छिप ये चाह बढ़ाते ।

मोहि बुलाय रूप दिखलाते छिपे अधर मुसुकाते ॥
बैन छिपाय नैन से कहिके विरह आग बरसाते ।
कह 'अम्बा' सुन रे मन मूरख प्रेम रूप दरसाते ॥

॥ पद ॥

प्रभु जी कछु न कहन हम पायो ।
आए दिन हेरे रघुवंशी पापी सिर न नवायो ।
चरन सीस धरि बहु विनती करि तब दासीन कहायो ॥
एक लालसा है उर माहीं प्रभु निज कछु न सुनायो ।
प्रभु विश्वास जोर उर मोरे धरमहु यदपि भुलायो ॥
जानत पाप बहुत प्रभु मोरे करुना उर नहिं छायो ।
प्रेम डोरि में जोरि गांठ दे झूलन प्रभुहि झुलायो ॥
बहुत खीस लघु चूक हमारी अबहूँ मोहि तरसायो ।
प्यारे प्राण गगन दिसि ताकत प्रेम अमी न गिरायो ॥
जो सुख मिलै नयन भरि देखत तो सुख कतहुँ न पायो
बलिरोजा अमरत्व पाइ गयो तू कस रहत लजायो ।
चहति 'अम्बा सुनु हो रघुनन्दन देहु प्रेम मन भायो ॥

॥ पद ॥

तरसत अब लगि नयन हमारे ।

मधु सम मधुर बयन सुनि २ मैं निरखि स्वरूप तिहारे ।
जब जब सुरति परत रघुनाथा बरसत नयन हमारे ॥
यहि सुख अगम अपार देखि प्रभु शंकर ध्यान संभारे ।
रघुपति मुख सम नहिं कहुँ दूजो कोटि मदन रति वारे ॥
एक अखंड अबध कौशलपति भजत जाहि संसारे ।
जप तप ब्रत संयम नहिं जानूं कर्म ज्ञान न हमारे ॥
एक नाम रसना तब आनूं प्रिय मम अबध दुलारे ।
तनक वदन छबि छनक दिखाओ तरसत नयन हमारे ।
कह 'अम्बा' करुनामय रघुवर हम चरनन बलिहारे ॥

॥ पद ॥

हा प्रभु मिलन ठांव न बतायो ।
कौन नाम से भजे गीध पति जेहि निज धाम पठायो ।
नहिं मैं प्रीति रीति कछु जानत प्रभु मोहि बिरह सतायो
यहि दुख ते नित दुखित रहत मन प्रभुके प्यार न पायो ।
हे धनुधर रघुनंदन राघव करुणा धाम कहायो ॥
कौन भरम से दरसन दीना नहिं हम गंग नहायो ।
कौन चूक हम कीनो प्रभु जी हठि मोहि दूरि भगायो ॥
हे रघुनंदन प्रान पियारे तुम बिन कौन सगायो ।
'अम्बा' जीवन धन अनुपम वन सरस वसन्त मनायो

॥ पद ॥

हे प्रभु का तुम्हरे मन आयो ।
एक बात पूछौं दुनिया में क्यों उपहास करायो ।
प्रेम अमिय जल जग निरमा के मन गगरी न भरायो ॥
विनती एक करत निरलज मन पापिन प्रण न पुरायो ।
रोवत धर्म हँसत हठि पापा तब प्रभु का हठि धायो ॥
जो तब वश न चलत परवशहो क्यों दुनिया निरमायो ।
अपने चरन दूरि करि राघव राखत हौ भरमायो ॥
दरसन दे अघ दूरि किए अस गंग की धार बहायो ।
कह 'अम्बा' सुनि लीजै प्रभु जी अबहूँ पापी कहायो ॥

॥ पद ॥

रघुवर तुम मम प्रान पिरीते ।
तुम से बिछुरि यही धरनी पर जियत बहुत दिन बीते
तुम बिन आस प्रकाश मिलै नहिं ज्यों रवि छिप बदलीते
मन से चूक जवन हम कीन्हें और भई करनी ते
सो सब भोर लगावहु राघव प्रणतपाल निज जीते
'अम्ब' तिहारी दोउ कर जोरत अब न विसारहु हीते

॥ पद ॥

राघव कैसे दिवस गँवावौं ।

आस तरंग लहरि लहरावत कब जीवन धन पावौं।
नीलम प्रभु चम्पक महरानी लखि कब नयन जुड़ावौं॥
कब सेवा प्रीतम की चाकरि करि मैं भेंट चढ़ावौं।
अँखियन से आंसू बरसा कर सावन झड़ी लगावौं॥
प्रेम सरोवर गोत लगा कर निज गगरी भरि लावौं।
मोर पिया की प्रीति सलोनी अब नागरी कहावौं।
'अम्बा' सखी के नयन रसीले प्रीतम दरसन पावौं॥

॥ पद ॥

प्रभु जी तुम समान सब काहीं।
सब के सुमिरे जात सबहिं पहँ एक मोर गृह नाहीं।
सब कर भार सँभारत माथे एक मोहिं ठुकराहीं॥
सबसे राखत नेह व नाता एक मोहि बिलगाहीं।
प्रिय तुम प्रेम जलज नहिं दूरे किमि उर अनल जराहीं
जब तब दरस उचित रघुनाथा तब कत पाप न जाहीं
प्रेम प्रीत ऐसो है तुम्हरो नेम धरम चलि जाहीं।
'अंबा' दासी के जीवन धन तुम्हरे बिन सुख नाहीं॥

॥ पद ॥

प्रियतम होत ज्ञान उर माहीं।
बार बार समुझावत गुरुवर युगल सुछबि झलकाहीं।

सियस्वामिनि केसाथ छिपतहो यह तो प्रिय भल नाहीं
पग परसे ते तरी अहल्या मोर पाप न सिराहीं।
पाप धरम के करत विचारा रहत सबै उरमाहीं॥
हरि पुर गीध गयो तव सुमिरन पाप कीट मोहिं खाहीं।
कौन पाप ऐसो है प्रभु जी देखत तोहिं न पराहीं॥
आस साथ बिश्वास देहु प्रभु गुरु पद सीस नवाहीं।
'अंबा' जीवन गागर खाली युग छबि रंग भराहीं॥

॥ पद ॥

प्यारी लागे हो साजन तोरी अंग की सुघराई।
लाखन काम निछावर तन पर
कोटि कोटि तरुनाई। प्यारी०
निरखहु सखि सब सिय प्रीतम को
आजहिं भर पहुनाई। प्यारी०
जिय की जरनी एक मुसकन में
चितवत करत बिदाई। प्यारी०
'अंबा' सब सखियन मिलि प्रभु से
बिनय करत सरनाई॥ प्यारी०

❀ समाप्त ❀

पद्मश्री बालमीकि शोध संस्थान
1536
अयोध्या
श्री मातारम दास छावनी सेवा ट्रस्ट

हर प्रकार की सुन्दर छपाई के लिए

श्रीसीताराम प्रेस

प्रमोदवन, श्रीअयोध्याजी

में पधारें।